आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2617 • उदयपुर, बुधवार 23 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कैमूर (बिहार), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 6 फरवरी 2022 को रीना देवी मेमोरियल हॉस्पीटल एन.एच.2 देवकली मोहनियॉ, जिला कैमूर (बिहार), में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रीना मेमोरियल हॉस्पीटल ट्रस्ट मोहनियॉ एवं तान्या विकलांग सेवा संस्थान कैमूर रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 80, कृत्रिम अंग माप 15, कैलिपर माप 16, की सेवा हुई तथा 10 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री डॉ. राजेश जी शुक्ला (तान्या विकलांग सेवा संस्थान), अध्यक्षता श्रीमान् डॉ. अविनाश कुमार सिंह जी (मैनेजिंग डॉयरेक्टर), विशिष्ट अतिथि

श्रीमान् प्रेम शंकर जी पाण्डेय (हेड ऑपरेशन एण्ड एडमिनिस्ट्रेटर) रहे।

कैलीपर्स माप टीम में श्री डॉ. पंकज जी (पी. एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री लालसिंह भाटी जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

शेगाँव, बुलढाणा (महाराष्ट्र), दिव्यांग जाँच-चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है। दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 6 फरवरी 2022 को माहेश्वरी भवन, शेगाँव जिला बुलढाणा (महाराश्ट्र) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रोटरी क्लब शेगाँव, महाराष्ट्र रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 470, कृत्रिम अंग माप 155, कैलिपर माप 27, की सेवा हुई तथा 29 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् डॉ. आनन्द जी झुनझुनवाला (जिला गर्वनर रोटरी), अध्यक्षता श्रीमान् नंदलाल जी मुदंड़ा (शाखा प्रेरक शेगाँव), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् डॉ.पी.एम. भुतड़ा (असिस्टेंड गर्वनर रोटरी), श्रीमान् दिलीप जी भुतड़ा (डॉक्टर), श्रीमान् आशीश जी टिबड़ेवाल (रोटरी सचिव) रहे। कैलीपर्स माप टीम में डॉ. वरुण जी (ऑर्थोपेडिक), श्री नेहांश जी मेहता, रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), शिविर टीम में श्री मुकेश कुमार जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरीश जी रावत (सहायक), श्री भगवती लाल जी पटेल (टेक्नीशियन) ने भी सेवायें दी।

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

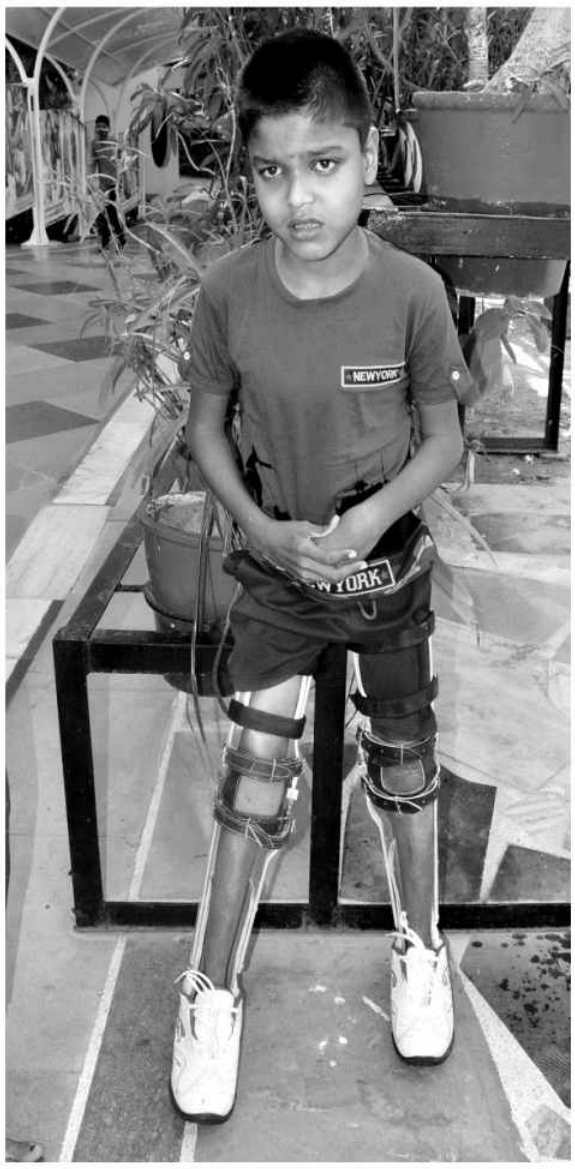

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया। दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

सभी हमारे एक पिता की सब संतान बाबू, बन्धुओं दूतों ने कहा आपको गुरुदेव जी ने तुरन्त बुलाया है क्या हो गया? हम आये थे राजी–राजी अयोध्या को छोड़कर आये थे क्या हो गया? कुछ बताओ तो सही। दूत सिर नीचा कर लेते हैं। बताते कुछ नहीं हैं। तुरन्त लौट चलिए अयोध्या में आपको बुलाया जा रहा है और भरत शत्रुध्न जी जब आये। चारों तरफ अन्धेरा छाया हुआ है। जैसे अमावस्या की काली रात्रि है। अयोध्या डरावनी लगती है, अयोध्या जंगल जैसी लगती है। अयोध्या में पशुओं की आवाजें आती है। अयोध्या में तकलीफें आती है, अयोध्या में कोई कुछ नहीं कहता। किसी को भरत जी पूछते है क्या हुआ ?

अपनी गर्दन झुका लेता है आगे बढ़ जाता है। आँखों में आंसू आ जाते हैं। अपने दुपट्टे से आँखों के आंसू को पौंछ लिया। सबसे कैकयी मिली आओ बेटा आओ अरे माँ कोई कुछ बोलता नहीं। मेरे अयोध्या में इतनी कालिमा कैसे छा गयी? अरे बेटा काम तो अच्छा बन गया था मैंने तेरे लिए राज्य मांग लिया। मेरे लिए राज्य ? मेरे को राज्य नहीं चाहिए माँ। किसके लिए राज्य मांगा ? अरे तेरे लिए राज्य मांगा। राम के लिए 14 वर्श का वनवास मांगा वो वनवास के लिए चले गये। राम चले गये। हाय भरत जी धड़ाम से मूर्छित होकर गिर पड़े। शत्रुध्न भी गिर पड़े। जैसे जहर में भीगो करके बाण मारती है वो सोचती है मैं पुश्प लगा रही हूँ। भरत जी को बाण जैसे लगते हैं। कहती है बस एक ही तकलीफ हुई। तुम्हारे पिताजी नहीं रहे।

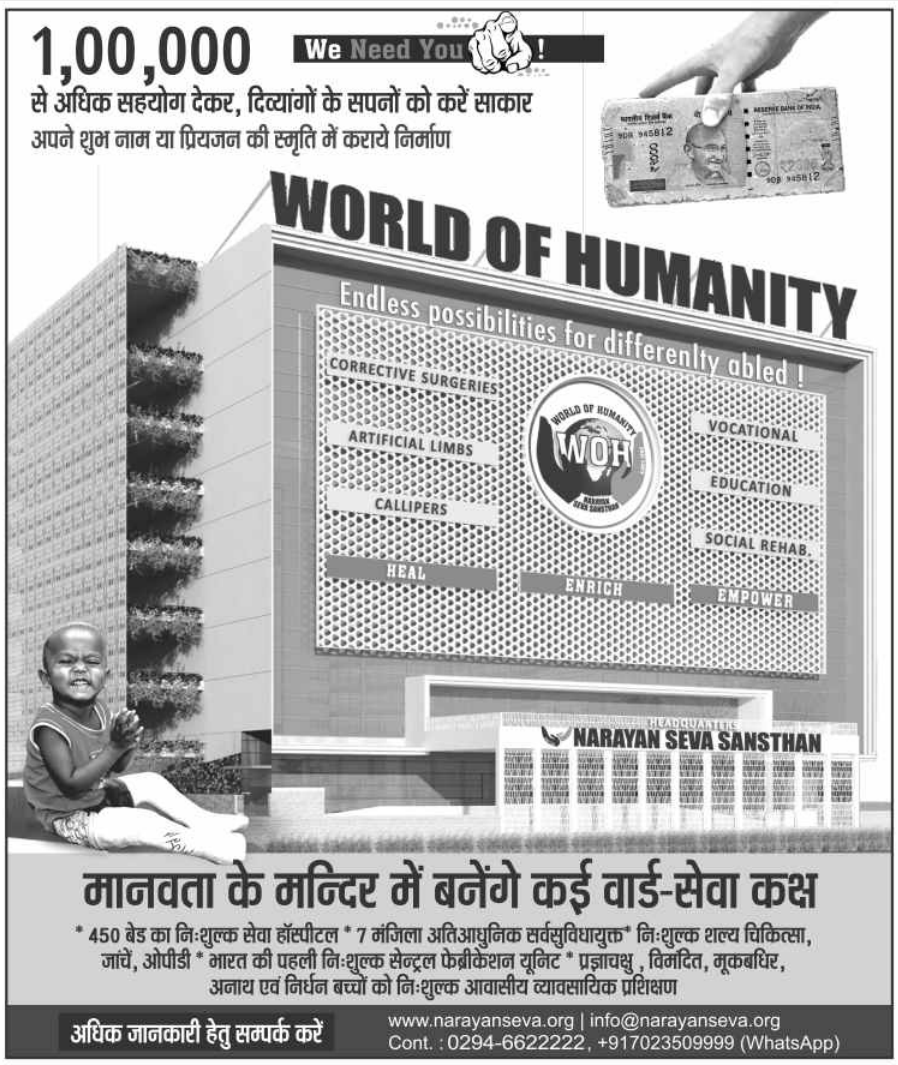

सम्पादकीय

जीवन एक जंग हैं यह कहने वाले अनेक लोग मिल जाते हैं। उनके विचारों को देखें तो वे अपने अनुभव से सही ही हैं। जीवन में व्यक्ति संघर्ष करके ही अपना अस्तित्व बनाये रख सकता है। किन्तु यदि जीवन केवल जंग ही होता तो परमात्मा जानबूझ कर हरेक जीव को जंग में क्यों धकेलता?

हाँ, यह जंग है पर लोगों से नहीं। हाँ यह जंग है पर कुछ प्राप्ति के लिये नहीं। वस्तुतः यह जंग है उन बुराइयों के खिलाफ जिन्हें हम काम, क्रोध लोभ, मोह, मत्सर, झूठ, अविश्वास आदि नामों से जानते हैं। यह जंग है उनको सन्मार्ग पर लाने की जो कि भटक गये हैं।

यह जंग है प्रकृति से, जिसके कारण कुछ लोग अभावों के गर्त में गिर गये हैं। यदि ये भाव पनप जायें तो जीवन को जंग कहना सार्थक है, वरना तो परमात्मा ने प्रसाद रूप में जीवन दिया है। एकोऽहम् बहुस्याम की भावना को साकार करने के लिये जीवन दिया है। हम जीवन पाकर परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनने का सौभाग्य पाते हैं।

कुछ काव्यमय

जीवन को इक जंग बनाकर,
लड़ते आये सारे लोग।
किन्तु मिट ना पाये जग से,
जो भी थे भावों के रोग।
जंग लड़े, हम दुर्बलता से,
जीतें मानवता को पाने।
तभी जंग है सफल बनेगी,
कहे सारे समझू–सयाने।

अपनों से अपनी बात

सच्चे कंगन

सोने–चांदी गहने के हमारे तन की शोभा होते हैं, किंतु निष्ठा, करुणा और मानवता तो हमारी आत्मा के आभूषण हैं।

एक बालक नित्य विद्यालय पढ़ने जाता था । घर में उसकी माता थी। मां अपने बेटे पर प्राण न्योछावर किए रहती थी। उसकी हर मांग पूरी करने में आनन्द अनुभव करती। पुत्र भी पढ़ने– लिखने में बड़ा परिश्रमी था। एक दिन दरवाजे पर किसी ने माई ओ माई पुकारते हुए दस्तक दी। वह द्वार पर गया देखा कि एक फटेहाल बुढ़िया हाथ फैलाए खड़ी थी। उसने कहा बेटा कुछ भीख दे दे।

बुढ़िया के मुंह से बेटा सुनकर वह भावुक हो गया और मां से आकर कहने लगा कि एक माता जी खाना मांग रही है। उस समय घर में कुछ खाने की चीज थी नहीं इसलिए मां ने कहा, बेटा, – रोटी साग तो कुछ बचा नही है। चाहो तो चावल दे दो।

पर बालक ने हठ करते हुए कहा – मां, चावल से क्या होगा ? तुम जो अपने हाथ में सोने का कंगन पहने हो, वहीं दे दो न इस बेचारी को। मैं जब बड़ा होकर कमाऊंगा तो तुम्हें दो कंगन बनवा दूंगा। मां ने बालक का मन रखने के लिए सोने का कंगन कलाई से उतारा और कहा– लो दे दो। बालक खुशी – खुशी भिखारिन को दे आया। भिखारिन को तो मानो खजाना ही मिल गया। कंगन बेचकर उसने परिवार के बच्चों के लिए अनाज, कपड़े आदि जुटा लिए। उसका पति अंधा था। उधर वह बालक पढ–लिखकर विद्वान हुआ, काफी नाम कमाया। एक दिन वह मां से बोला, मां, अपने हाथ का नाप दे दो, मैं कंगन बनवा दूं। उसे अपना वचन याद था। माता ने कहा मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूं कि अब कंगन शोभा नहीं देंगे। हां, कलकत्ते के तमाम गरीब, दीन– दुःखी बीमार बालक विद्यालय और चिकित्सा के लिए मारे – मारे फिरते हैं। जहां निःशुल्क पढ़ाई और चिकित्सा की व्यवस्था हो ऐसा कर दे। मां के उस यशस्वी पुत्र का नाम था– ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।

– कैलाश 'मानव'

सहायता का क्रम

एक युवक ने सड़क के किनारे खड़ी एक अधेड़ उम्र की महिला को देखा। शाम के धुँधलके में भी वह जान गया कि महिला को सहायता की सख्त जरूरत थी। उसने मर्सीडीज के सामने अपनी पुरानी–सी मोटर साईकिल रोकी, महिला के मुख पर एक फीकी– सी मुसकान उभरी। पिछले एक घंटे से वह वहाँ खड़ी थी, परंतु किसी ने उसकी सहायता नहीं की। जब गरीब से दिखने वाले उस युवक को महिला ने अपनी ओर आते हुए देखा तो सोचा कि कहीं ये मुझे लूटने के इरादे से तो नहीं आ रहा है? महिला के चेहरे पर डर के भाव देखकर युवक ने प्रेमपूर्वक कहा –मैडम, मैं आपकी मदद करने आया हूँ। मेरा नाम मनोहर है। कार का टायर पंक्चर हुआ था। मनोहर ने कार के नीचे घुसकर जैक लगाने के बाद टायर बदल दिया। इस क्रम में उसके कपड़े गंदे हो गए थे तथा शरीर पर एक–दो जगहों पर खरोंचें भी आ गईं थीं। महिला ने सहायता के बदले रुपये देने चाहे तो मनोहर ने कहा–मैं तो आपकी सहायता करने के लिए रुका था। जब कभी किसी को सहायता की जरूरत हो तो आप उसकी सहायता कर देना। दोनों अपने–अपने रास्तों पर चल दिए।

कुछ ही दूर जाने के बाद, उस महिला को भूख लगी। उसे थोड़ी ही दूर एक छोटा–सा रेस्टोरेंट दिखाई दिया। उसने वहाँ नाश्ता करने का निश्चय किया। उसकी टेबल पर एक मजिला वेटर (परिवेषिका) जल्दी से आई। वह परिवेषिका गर्भवती थी। परंतु उसके चेहरे पर चिंता के भाव नहीं थे। वह मुसकुरा कर अपना काम कर रही थी। कार वाली महिला उस परिवेषिका के काम से बहुत प्रभावित हुई। नाश्ता करने के बाद महिला ने परिवेषिका को 100 रुपये दिए। परिवेषिका बाकी रुपये लेने के लिए काउण्टर पर गई।

इसी बीच वह धनी महिला चुपके से चली गई। परिवेषिका जब वापस लौटी तो देखा कि वह महिला टेबल पर एक चिट्ठी के साथ 500–500 के कई नोट रख कर गई थी। उस चिट्ठी पर लिखा था –"मेरी किसी ने मदद की थी, मैं तुम्हारी मदद कर रही हूँ। मदद का यह क्रम टूटने ना देना।"

यह देख कर परिवेषिका की आँखें भर आईं। वह जानती थी कि उसके प्रसव के लिए जरूरी रुपयों को लेकर उसका पति कितना चिन्तित था? शाम को वह घर पहुँची। पति बिस्तर पर थकान के मारे सोया हुआ था। वह उसके पास गई और पति के बाल सहलाती हुई बोली – हमारे पैसों की समस्या हल हो गई, मनोहर ! यह कहते हुए उसने सारा वृतान्त मनोहर को कह सुनाया। मनोहर जान गया कि उसके द्वारा की गई मदद, वापस उसके पास अन्य रूप में लौट आई थी।

सच ही कहा गया है –
कर भला, हो भला।
– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

नाई अत्यन्त दुबला–पतला था, उसे देखते ही भारी डील–डौल वाले राजनारायण हंस पड़े। उसे तुरन्त मालिश शुरू करने को कहा। नाई भी राजनारायण के विशालकाय शरीर को देख कर घबरा गया। उसने मालिश शुरू की मगर राजनारायण को कुछ महसूस ही नहीं हुआ, बोले जोर से कर। दुबला–पतला व्यक्ति, एक तो इतने बड़े नेता को देख पहले ही सहमा हुआ था, उपर से उनकी फटकार से वह हाथ तेज चलाने लगा, मगर उससे होता क्या था। राजनारायण के लिये तो उसकी मालिश ऐसी थी जैसे शरीर पर चींटी रेंग रही हो। उन्होंने उसे और तेजी से हाथ फेरने को कहा।

बिचारा नाई पसीने पसीने हो गया मगर राजनारायण सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने नाई से कहा –अपनी कमीज खोल, मैं बताता हूं मालिश कैसे होती है। अब नाई कैलाश की तरफ देखने लगा, मानो कह रहा हो कि किस मुसीबत में डाल दिया। निरीह जानवर की तरह उसने इधर–उधर देखा, भागने का कोई मार्ग भी नहीं था जिससे यहां से जान छुड़ाता। दरवाजा बंद था, खिड़की भी छोटी थी। गुस्से से कैलाश की तरफ देखा और मरता–क्या न करता की तरह बेबस, लाचार हो अपना कमीज खोला।

नाई की तो जान पर बन आई थी मगर कैलाश, तिलक व स्वयं राजनारायण स्थिति का मजा ले रहे थे। राजनारायण ने जैसे ही नाई की क्षीण काया को दबाया, बिचारा नीचे गिर पड़ा। अब कैलाश से नहीं रहा गया। उसने अपने मेहमान से विनती की कि वह किसी अन्य को ले आयेगा, इसे जाने दिया जाय।

राजनारायण ने भी हंसते हुए उसे उठाया और उसे धन्यवाद दिया। नाई को तो मानो नया जन्म मिल गया हो। उसने कमीज उठाया, पहना भी नहीं और सिर पर पांव ले कमरे से बाहर निकल पड़ा।

अंश - 015

संस्थान को धन्यवाद

रायपुर छत्तीसगढ़ से हम आये हैं। मेरा नाम जलेसी नेताम है। मेरा लड़का का नाम मनोज कुमार नेताम है।

गाड़ी पर हाई टेंशन तार गिरने से अपना पांव गंवा बैठे मनोज कुमार नेताम। बिना पांव के जिंदगी जीना कितना दर्दनाक होता है, ये दर्द तो वो ही महसूस कर सकता है जिसके पांव ना हो। मनोज के पिता अपने नारायण सेवा संस्थान द्वारा अपने बेटे को निःशुल्क पांव लगाने पर बेहद खुश हैं।

मनोज के पिता बताते हैं अपने पैर, मनोज कुमार के अच्छे से लग गया और हम खुश है उम्मीद नहीं था कि हमारे लड़का के पैर लगेगा यहां आने के बाद विश्वास हो गया, पैर लग गया। खुद मनोज कहते हैं पैर तो पहले थे, अपने पांव से नहीं चला लेकिन आज अपने पांव पे चल रहा हूं। मैं बहुत खुश हूं। मेरा पैर लग गया, मैं चल रहा हूं। मनोज को नई जिदंगी देने के लिए ये संस्थान को बहुत धन्यवाद देते हैं।

पोषक तत्वों से भरपूर बींस

हमारा शरीर विटामिन–बी स्टोर नहीं कर सकता क्योंकि वह पानी में घुलनशील है। इसलिए बींस को अपनी डाइट का हिस्सा बनाकर हम विटामिन–बी की आवश्यकता को पूरा कर सकते हैं। यदि आपको पास्ता खाना पसंद है तो आप सोया बींस पास्ता खा सकते हैं। स्वाद के साथ सेहत के लिए भी बहुत लाभकारी है बींस। कई तरह के पोषक तत्वों से भरपूर बींस में विटामिंस और फोलिक एसिड प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि इसके सेवन से दिमाग तेज होता है और कई तरह की शारीरिक समस्याएं दूर होती हैं। बींस का प्रयोग रूमेटिक तथा आर्थराइटिस में समस्या की दवा बनाने के लिए किया जाता है। बींस में एंटीऑक्सीडेंट की मात्रा भी काफी होती है।

पोषक तत्वों से भरपूर पौष्टिक तत्वों से भरपूर बींस खाने से बहुत से स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए कितना फायदेमंद है, इससे समझा जा सकता है कि एक कप बींस में लगभग 74 प्रतिशत तांबा, 51 प्रतिशत जिंक 4 मिग्रा. आयरन, 15 मिग्रा. मैग्नीशियम, 230 मिग्रा. फॉस्फोरस, 16 ग्रा. प्रोटीन और 78 मिग्रा. कैल्शियम पाया जाता है। बींस में मौजूद विटामिन–बी लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायक है। इसका कार्य शरीर को ऊर्जा प्रदान करना और मस्तिष्क के संकेतों को समझना है यानी तंत्रिका तंत्र के लिए बींस औषधि की तरह है।

हमारा शरीर विटामिन–बी स्टोर नहीं कर सकता, क्योंकि वह पानी में घुलनशील है। इसलिए बींस को अपनी डाइट का हिस्सा बनाकर हम विटामिन–बी की आवश्यकता को पूरा कर सकते हैं। यदि आपको पास्ता खाना पसंद है तो आप सोया बींस पास्ता खा सकते हैं। सोया बींस से बना पास्ता साधारण आटे से बने पास्ता से कहीं अधिक लाभदायक होता है, क्योंकि इसमें फाइबर एवं प्रोटीन भी होते हैं। यदि आप इसे रोजाना थोड़ी बहुत मात्रा में भी खाते हैं तो भी इससे आपका पाचनतंत्र मजबूत होता है और शरीर को प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं, जो कि कई तरह की हरी सब्जियों में पाए जाते हैं।

मेटाबॉलिज्म रखे दुरुस्त बींस में उपस्थित जिंक थकान, अनिद्रा, मूड स्विंग्स, एकाग्रता में कमी और कमजोर मेटाबॉलिज्म को ठीक करती है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स हमारे शरीर को फ्री रेडिकल्स के कारण होने वाली नुकसान से भी बचाते हैं। इसमें विटामिन बी–6, पैंथोथेनिक एसिड, नियासिन और थाइमीन जैसे तत्व भी पाए जाते हैं। बींस में विटामिन–ई बादाम के जितनी मात्रा में पाया जाता है। ये सभी तत्व दिमाग और तंत्रिका तंत्र संबंधी समस्याओं से निजात दिलाते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

सन् 1987 निकल गया और कैलाश की उम्र 40 वर्ष हो गयी थी। दयामय, कृपामय, ''भूल दिखाकर, उसे मिटाकर अपना प्रेम प्रदान करो''। भगवान इतने लोग जुड़ते गये– हँसते हँसते चालीस वर्ष। भीण्डर का छोरा, उदयपुर जिले का एक कस्बा, दरीबा का तालाब, धनेरा का तालाब कभी कभी भीण्डर से भीलवाड़ा यात्रा। मोटे रूप से भीलवाड़ा से सुमेरपुर, पाली, सिरोही, झालावाड़, सरदार शहर और उदयपुर की यात्रा 1988 का वर्ष आ गया। कमला जी से विवाह 1968 में, बीस वर्ष हो गये। ज्यादातर भीण्डर ही घूंघट में रहना। एक बार मैं जब गया भीण्डर, वहाँ देखा था किसी के दोनों पैर कटे हुए। मैंने कहा– जयपुर में बहुत अच्छी संस्था है, आप वहाँ चले जाओ, आपके कृत्रिम अंग लग जायेंगे। महीने भर बाद आये, अपने कृत्रिम अंग से चल रहे थे, बहुत खुशी हुई। जब इतिहास के पन्नों को पलटते हुए आज 13 अप्रेल 2020 को प्रातःकाल छः बजे मनोभाव को लिखा रहा हूँ। भगवान ने कितनी कृपा कर दी? हजारों कृत्रिम अंग नारायण सेवा के माध्यम से लगे। मॉड्युलर अच्छे हाथ, अच्छे पैर इतिहास के पन्ने खुलते गये। कभी आगे से कभी पीछे से। भविष्य तो कभी आया ही नहीं। आज 13 अप्रैल के समय का एक सैकण्ड भी हम जबरदस्ती वर्तमान नहीं बना सकते। वो वर्तमान बनेगा तभी बनेगा। आज 13 अप्रैल का साँयकाल आयेगा, उस समय ही आयेगा। दुनिया की सारी सम्पति खर्च कर दो कि आज का सायंकाल अभी आ जाये तो भी नहीं आ सकता है। वो भविष्य है, और वर्तमान में जो बीज बो दिये, उसका परिणाम भुगतना ही होगा। अवश्य भुगतना होगा। राजी–राजी भुगता तो बहुत बढ़िया बात है। समताभाव में अभी ध्यान में तटस्थ से तट पर बैठा कैलाश को एक आधार मिल गया। तटस्थ के तट पर स्थित हो जाना। मुंशी जी की चर्चगेट के पास की होटल, बड़ी कृपा उनकी। उन्होंने टी.वी. में भी देखा उन्होंने कहा कैलाश जी मुम्बई जब भी आओ, मेरी होटल में निःशुल्क रहियेगा। एक कमरा, दो कमरा, चार कमरा चाहे जितने कर देंगे। वर्षों तक निभाया उन्होंने, मैं उनका बड़ा अभारी हूँ। मुंशी जी सेना में थे। बता रहे थे मेरे पिताजी का मैं एक बेटा सेना से वोलेन्टरी रिटायर होकर के कोई व्यापार और उद्योग में लगना चाहता था। मेरे पिताजी ने कहा बेटा एक ही बात है, बहुत प्रेम से कह रहा हूँ। यदि तुम मुम्बई आ गये, मेरा काम सम्भाल लिया तो मैं सारा काम आपको सौप दूँगा। मेरे बेटे हो, यदि तुम किसी अन्य उद्योग धन्धे में चले गये, मुम्बई से बाहर कहीं चले गये, तो मैं होटल किसी और को दे दूँगा। मैं अपनी सारी धन सम्पत्ति किसी और को दे दूँगा– उन्होंने कहा– कैलाश जी, मैंने पिताजी की बात मानी और मैं तुरन्त मुम्बई आ गया। बहुत बढ़िया होटल, तीसरी मंजिल और ठीक उसके सामने से उतरकर सामने की साइड में समुद्र तट का नाम भूल गया, कोई फर्क नहीं पड़ता, फर्क तब पड़ता जब तटस्थभाव नहीं रखते।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 368 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023